मौर्योंतर काल

मौर्योंतर काल

- मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योगय शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- मौर्योतर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं–

  I – Indo Greek (हिन्द यवन)

  S – शक् (सीथियन)

  P – पहलव (पार्थियन)

  K – कुषाण

Indo Greek (हिन्द यूनानी)

- इनका क्षेत्र हिन्दुकुश पर्वत के समीप का बेक्टेरिया था। अत: इन्हें बैक्टेरियन शासक भी कहते हैं।
- हिन्द यूनानी भारत में दो चरण में आए थे–
- **प्रथम चरण–** डेमोट्रियस ने लगभग 183 ई.पू. में पश्चिमयोत्तर भारत पर आक्रमण करते हुए। पंजाब एवं सिन्ध प्रांतों को जीता और अपने जीते गये क्षेत्र की राजधानी शाकल (स्याल कोट) को बनाया और 'डेमोट्रियस वंश' की स्थापना किया।
- डेमोट्रियस ने सुंग राजा, पुष्यमित्र सुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- अगला शासक मिनाण्डर बना। इसने भी सुंग राजा पुष्यमित्र सुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- इसे मिनाण्डर बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- नागसेन एवं मिनाण्डर (मिलिन्द) के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्द पन्हों में है।
- इनमें मिनाण्डर प्रश्न पुछते हैं और नागसेन उसके उत्तर देते है।
- सर्वप्रथम मिनाण्डर ने सोने के सिक्के जारी किये थे।
- मिनाण्डर का सर्वाधिक सिक्का गुजरात के भड़ौच नामक स्थान से मिला है। जो एक बन्दरगाह स्थल था।
- मिनाण्डर के काल में मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में सर्वाधिक विकास हुआ।
- हिन्दयवन के अंतिम शासक हेलियोक्लीच थे।
- **''द्वितीय चरण''–**
- इसमें युक्रेटाइडिस ने तक्षशिला में युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।
- इस वंश के शासक आन्तीआल ने अपना राजदूत हेलियोडोटस को सुंग राजा भागव्रत के दरबार मतें मित्रवत् संबंध स्थापित करने के लिए भेजा।
- हेलियोडोटस भागवत धर्म (विष्णु भगवान) से प्रभावित होकर इस धर्म को अपना लिया और इस धर्म के सम्मान में विदिशा (बेसनगर) में गरूडध्वज अभिलेख बनवाया।
- यह किसी राजदूत का एक मात्र व्यक्तिगत अभिलेख है।
- यूक्रेटाइडिस वंश के अंतिम शासक हर्मियस थे।

हिन्दू यूनानी की विशेषता

- ये यवन से आकर भारत में बस गए अत: इन्हें हिन्द यूनानी कहते हैं।
- इन्हें काली मिर्च बहुत ही पसंद थी। अत: काली मिर्च को यमन प्रिय कहा जाता है।
- भारत में पहली बार चित्रयुक्त एवं लेखयुक्त सोने के सिक्के यूनानियों ने चलाया। जिसे ड्रम कहा जाता था। यह खरोष्टी भाषा में लिखा गया है।
- यूनानियों ने भारत में खगोल, ज्योतिष, गणित तथा समय का गणना प्रारम्भ किया।
- भारतीय नाटक का विकास यूनानियों के द्वारा हुआ है। भारतीय नाटक में परदा के लिए यवनिका शब्द का प्रयोग होता है।
- इन्डोग्रिक शासन में मुर्त्ति निर्माण के क्षेत्र में एक नयी शैली गंधार शैली का विकास हुआ और इसी शैली में निर्मित प्रथम मुर्त्ति महात्मा बुद्ध की बनाई गयी।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

'शक वंश''/सिथियन वंश (90BC)

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाला दूसरा आक्रमणकारी शक या सिथियन थे।
- ये बेलन-दर्रा पार करके भारत आये थे।
- शक् मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- इन्हें युची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया।
- शको के शासन व्यवस्था क्षत्रप शासक व्यवस्था थे।
- शक् राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- शकों ने भारत में उत्तर एवं पश्चिम दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।
- ये भारत में आकर 5 जगहों में बसे थे।

  (i) कंधार (अफगानिस्तान)

  (ii) तक्षशीला (पाकिस्तान)

  (iii) मथूरा (UP)

  (iv) उज्जैन (MP)

  (v) नासिक (महाराष्ट्र)(भूमिका)

- तक्षशिला में शक वंश की स्थापना माउस के द्वारा किया गया था।
- मथुरा में शक वंश की स्थापना राजुल के द्वारा किया गया था।
- उज्जैन में शक वंश की स्थापना चेस्टक या यशोमति के द्वारा किया गया था।
- नासिक में शक वंश की स्थापना भूमक के द्वारा किया गया था।
- मथुरा के शक शासक राजुल को मालवा के शासक ने 57BC में पराजित कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लिया। इस उपलक्ष्य में उसने 57 ई.पू. विक्रम संवत् नामक Calander चलाया।
- भारतीय संविधान का यह मूल Calander था, किन्तु 1957 में शक् संवत् को अपना लिया गया।
- नासिक का शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र सातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- इन सिक्को पर एक तरफ नहपान की आकृति तथा दूसरी तरफ गौतमी पुत्र शातकर्णी की थी।
- सबसे प्रतापी शक् शासक उज्जैन का रूद्रदामन था।
- रूद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्टि पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया।
- रूद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- यह संस्कृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है। इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात में सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- रूद्रदामन ने इस झील का पुनर्निर्माण (जिर्णोधार) अपने अधिकारी शुवीशाख द्वारा करवाया।
- गुप्त शासक सकंदगुप्त ने भी इस झील का पुनर्निर्माण करवाया।

Note:- ब्राह्मी लीपि का आधुनिक रूप देवनागरी लिपि है। हिन्दी, सस्कृत देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

- अंतिम शक् शाक रूद्रसिंह-III थे।
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए। इस सिक्के को रूपक कहा जाता था।
- शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्क के Calander का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत कहते हैं।

ग्रेगोरियन कैलेंडर

- यह सूर्य पर अधारित है।
- यह ईसा के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।
- ग्रेगोरियन Calander के अनुसार आज 15 जुलाई, 2022 है।
- **विक्रम संवत्–** इसे मालवा शासक विक्रमादित्य-IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।
- यह ग्रेगोरियन Calander से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calander में 57 जोड़ दिया जाता है।
- विक्रम संवत् के अनुसार आज 15 जुलाई, 2022 (2022 + 57) = 2079 ई. है।
- इसी कारण संविधान लागू की तिथी 1949 को विक्रम संवत् में (1949 + 57) = 2006 कहता है।

By - Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- **शक् संवत–** इसे कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय प्रारम्भ किाय।
- यह ग्रेगोरियन Calander से 78 ई. बाद आया। अत: यह ग्रेगोरियन Calander से 78 साल पिछे है।
- 22 मार्च, 1957 ई. से राष्ट्रीय पंचाग के रूप में शक् संवत को अपनाया गया था।
- शक् संवत में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calander में 78 साल घटा दिया जाता है।
- आज शक् संवत के अनुसार आज की तिथि 15 जुलाई, 2022 (2022 – 78) = 1944 ई. है।
- शक् संवत एवं विक्रम संवत के बीच 135 वर्ष के अंतर है।
- विक्रम संवत्, शक् संवत्, हिजरी Calander (मुस्लिम Calander) चन्द्रमा पर आधारित है। अत: इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पिछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है।

पहलव/पार्थीयन वंश

- मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा वंश पार्थीयन या पहलव थे।
- ये ईरान/फारस/पर्सिया के थे, जिस कारण इन्हें पार्शियन कहा जाता है।
- इन्होंने अपनी राजधानी पुरूषपुर (पेशावर) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक मिथ्रेडेटस थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोफर्निस थे जिनका पाकिस्तान से ''तख्त-ए-बही'' अभिलेख मिला है। यह खरोष्टि लिपी में है। इनके समय पूर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक 'सेन्ट थामस' भारत आया। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

कुषाण वंश

- मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाला अंतिम शासक कुशाण वंश थे।
- ये मध्य एशिया (चीन तुर्कीस्तान) के निवासी थे।
- मध्य एशिया से यूचि कविला 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के दौरान था।
- कुषाण वंश के संस्थापक 'कुजुलकडफिसस' थे।
- इन्होंने तांबे को सिक्का चलाया था।
- ये शैव धर्म को मानते थे। जिसका प्रमाण उनके सिक्के से मिले हैं। इन सिक्को पर एक तरफ कुजुलकडफिसस तथा दूसरी तरफ नंदी बैल की आकृति थी।
- अगला शासक विम-कडफिसस बना, जो इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- इन्होंने महेशवर की उपाधी धारण किया।
- इनके सिक्के पर एक तरफ खरोष्टी लीपि में इनका नाम लिखा हुआ था तथा दूसरी तरफ शिव पार्वर्ती एवं त्रिशुल की आकृति बने हुयी थी।
- कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक ''कनिष्क'' था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक् संवत् प्रारम्भ किया।
- इसने अपनी राजनीति की राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी तक्षशिला को बनाया बाद में सांस्कृतिक राजधानी मथुरा (मंधूसा) को बनाया।
- कनिष्क ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का ''भिक्षा-पात्र'' तथा यहाँ के दार्शनिक अश्व-घोष को अपने साथ लेता गया। इसी अश्वघोष को कनिष्क ने अपने राज कवि का दर्जा दिया।
- कनिष्क बौद्ध विद्वान पार्श्व के कहने पर काश्मीर के कुंदन वन में चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन का आयोजन प्रथम सदी (102 ई. में) कराया। इस बौद्ध सम्मेलन में अध्यक्ष के साथ साथ उपाध्यक्ष की भी व्यवस्था की गई। अध्यक्ष पद पर वशुमित्र तथा उपाध्यक्ष पद पर अश्वघोष को बैठाया गया। इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखा में बंट गया है।

  1. हीनियान एवं 2. महायान।
- कनिष्क महायान शाखा को मानता था।
- महायान बौद्ध धर्म की एक सरल शाखा थी जिसमें भिक्षुक सोने के आभूषण धारण कर सकते थे तथा माँस खा सकते थे।
- कनिष्क के प्रयास से ही बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार मध्य एशिया और चाइना में हुआ।
- कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- अश्वघोष ने बुद्ध-चरित्र लिखा।
- चारक ने चरक-संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र में सापेक्षिकता के सिद्धांत की चर्चा की है। अत: इन्हें भारत का आइंस्टिन कहते हैं।
- नागार्जुन बौद्ध धर्म के 'शून्य वाद' को जानते थे।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- वसुमित्र नामक विद्वान ने महाविभाष सूत्र के रचना किया। जिसे बौद्ध का विश्वकोष कहा जाता है।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्क के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ती पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- कनिष्क के समय तांबे के सिक्के को काकिणी कहा जाता था।
- मथुरा से कनिष्क के सिक्को का एक ढ़ेर मिला है। जिसमें कनिष्क को एक सैनिक वेश-भूषा में दिखाया गया है।
- कनिष्क के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- कनिष्क के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलीप बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा एवं कल्याण बंदरगाह प्रमुख थे।
- अज्ञात की रचना ''पेरिप्लस of the एरिथ्रीयन सी'' (POAS) से यह जानकारी निकली है कि कनिष्क का सर्वाधिक व्यापार रोम से होता है।
- कनिष्क के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय अरब नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की। मानसून अरबी भाषा का शब्द मैसीम से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ होता है मौसम के अनुरूप पवन की दिशा।
- कनिष्क के शासन काल में मूर्ति निर्माण कला में काफी विकास हुआ।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरूषपुर के समीप एक विशाल संघारामबिहार का निर्माण करवाया था।
- कनिष्क को द्वितीय अशोक कहा जाता है।

रेशम मार्ग (Silk Rout)

- यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।
- इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग काश्मीर तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- कनिष्क ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था। यह मार्ग चीन के क्षेत्राधिकार में आता था।
- रेशम मार्ग आम तौर पर वह स्थलीय रास्ता कहलाता है जिसे चीन के हान राजवंश के महान यात्री यांगछयान ने खोला था। जो हान वंश की राजधानी छागआन से पश्चिम में रोम तक पहुंचा था।
- रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्क कर (Tax) होता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।
- 105 ई. (लगभग) कनिष्क की मृत्यु हो गई।
- इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं हो, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

Oneliner Question

★ मौर्योत्तर काल में विस्तृत राज्य की स्थापना किन दो वंशों ने की **–सातवाहन एवं कुषाण**

★ शुंग वंश का अंतिम शासक कौन था **–वशिष्ठिपुत्र पुलुवामी**

★ कण्णव वंश की स्थापना वासुदेव ने की थी और इस वंश का अंतिम शासक कौन था **–सुशर्मा गौतमी**

★ सातवाहन वंश में संरक्षिका के रूप में किन दो महिलाओं ने शासन किया **–नगनिका एवं गौतमी**

★ अप्रतिहत चक्र की उपाधि किस प्रारंभिक सातवाहन शासक ने की थी **–श्री शतकर्णी**

★ आपीलक किस वंश का शासक था **–सातवाहन**

★ किस सातवाहन शासक ने वेणाकटक नगर की स्थापना की और वेणाकटक स्वामी की उपाधि धारण की **- गौतमी पुत्र शतकर्णी**

★ किस सातहवान शासक को दक्षिणापथेश्वर कहा गया है **–वाशिष्ठिपुत्र पुलुवामी**

★ 'दो पतवारों वाले जहाज' का चित्र किस शासक के सिक्कों पर मिलता है **–देवभूति**

★ नासिक के बौद्ध संघ को 'अजकालकिय' एवं काले के बौद्ध संघ को 'करजक' नामक ग्राम किस सातवाहन शासक ने दान में दिया था **–गौतमी पुत्र शतकर्णी**

★ कन्हेरी गुहा अभिलेख के अनुसार शक शासक रुद्रदामन ने किस सातवाहन शासक को दो बार पराजित किया था **–वाशिष्ठिपुत्र शतकर्णी**

★ गुणाढ्य और शर्ववर्मन को किस शासक ने संरक्षण प्रदान किया था **–सातवाहन शासक हाल**

★ मथुरा के क्षत्रप का पहला शक शासक कौन था **–राजवुल**

★ शकों के क्षहरात कुल का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन था **–नहपान**

★ शकों के कार्दमक कुल का संस्थापक कौन था **–चष्टन**

★ गिरनार या जूनागढ़ में सुदर्शन तड़ाग का जीर्णोद्धार कराने वाला रुद्रदामन का राज्यपाल कौन था **–सुविशाख**

★ रुद्रदामन के शासनकाल में कौन-सा स्थल शिक्षा का प्रमुख केंद्र था **–उज्जयनी**

★ ईसाई धर्म प्रचारक सेंट टॉमस किसके शासन काल में भारत आया था **–गोंदोफर्नीज**

★ महाभारत में सोत्थवती को किस संज्ञा से अभिहित किया गया है **–शक्तिमती**

★ चेदि वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक कौन था **–खारवेल**

★ भारत में प्रथम बैक्ट्रियाई यवन शासक कौन था **–डेमेट्रीयस**

★ बौद्ध ग्रंथ में मिनेण्डर को किस नाम से अभिहित किया गया है **–मिलिंद**

★ चिकित्सा शास्त्र का जनक किसे माना जाता है **–हिप्पोक्रेटस**

★ भारत में कुषाण वंश का पहला विख्यात शासक कौन था **–कुजुल कडफिसस**

★ कुषाण राजवंश का सर्वाधिक महान शासक कौन था **–कनिष्क**

★ बौद्धों की महायान शाखा का उत्थान किस बौद्ध संगीति के बाद हुआ **–चतुर्थ बौद्ध संगीति**

★ इक्ष्वाकुओं ने किस वंश के पतन के बाद अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की **–सातवाहन**

★ किस स्मृति में मौर्योत्तर काल में 57 जातियों के होने का उल्लेख मिलता है **–मनुस्मृति**

★ महाभारत में चार वर्णों के लिए कितने प्रकार के कर्तव्य बताए गए है **–नौ कर्त्तव्य**

★ कनिष्क ने किस धर्म को राज्याश्रय प्रदान किया था **–बौद्ध धर्म**

★ कला की किस शैली को 'ग्रीक-बौद्ध शैली' की संज्ञा दी जाती है **–गांधार शैली**

★ कनिष्क के शासनकाल में बौद्ध धर्म की कितनी शाखाएं विद्यमान थी **–अट्ठारह शाखा**

★ नक्षत्रों को देखकर भविष्य बताने की कला भारतीयों ने किन से सीखी **–यूनानियों से**

★ सर्वाधिक शक्तिशाली पह्लव शासक कौन था **–गोंदोफर्निज**

★ अभिलेखों में भूमिदान का पहला प्रमाण कब का है **–ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी का**

★ वाकाटक वंश का संस्थापक विंध्यशक्ति किस गोत्र का ब्राह्मण था **–विष्णुवृद्धि गोत्र**

★ किस कला को आदर्शवादी कला की संज्ञा दी जाती है **–मथुरा कला**

★ किस कला को यथार्थवादी कला की संज्ञा दी जाती है **–गांधार कला**

★ कला की किस शैली में बुद्ध की पहली मूर्ति का निर्माण किया गया **–गांधार शैली**

★ स्ट्रेटो II, स्ट्रेटो, डेमेट्रियस तथा मिनांडर में से वह हिंद यवन शासक जिसने सीसे के सिक्के जारी किए थे **–स्ट्रैटो**

★ बिंबिसार, गौतम बुद्ध, मिलिंद तथा प्रसेनजीत में से वह एक जो अन्य तीनों के समसामयिक नहीं था **–मिलिंद**

★ 'काव्य शैली' का प्राचीनतम नमुना मिलता है -काठियावाड़ के रुद्रदामन के अभिलेख में रुद्रदामन प्रथम की विभिन्न उपलधियाँ वर्णित हैं **–जूनागढ़ के अभिलेख में**

★ बिना बेगार के सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार कराया रुद्रदामन प्रथम ने उत्तरी तथा उत्तरी-पश्चिमी भारत में सर्वाधक संख्या में तीन के सिक्कों को जारी किया था **–कुषाणों ने**

★ प्राचीन भारत में नियमित रूप से सोने के सिक्के चलाए **–कुषाणों ने**

★ विम कडफिसेस, कनिष्क, नहपाण एवं बुध गुप्त में से जिसके सिक्कों पर बुद्ध का अंकन हुआ है। वह है **–कनिष्क**

★ कुजुल कडफिसेस, दिम कडफिसेस, कनिष्क प्रथम तथा हुविष्क में से वह शासक जिसको सर्वप्रथम सोने के सिक्के जारी करने का श्रेय दिया जाता है **–विम कडफिसेस**

★ विम कडफिसेस, कुजुल कडफिसेस, कनिष्क तथा हर्मवीज में से वह जिसने भारत में स्वर्ण सिक्कों का प्रचलन नियमित उपयोग के लिए किया था **–विम कडफिसेस ने**

★ कनिष्क के सारनाथ बौद्ध प्रतिमा अभिलेख की तिथि है **–81 ई. सन्**

★ कुषाण शासक कनिष्क का राज्याभिषेक हुआ **–78 ई. में**

★ शक संवत् प्रारंभ किया गया **–78 ई. में**

★ कनिष्क के समकालीन थे **–अश्वघोष एवं वसुमित्र**

★ अवघोष चरक, नागार्जुन तथा पतंजलि में से वह, जो कनिष्क के दरबार से संबद्ध नहीं था **–पतंजलि**

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ अश्वघोष, पार्श्व, वसुमित्र तथा विशाखदत्त में से वह जो कनिष्क प्रथम के दरबार में नहीं गया था **–विशाखदत**

★ तक्षशिला विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी **–चरक तथा जीवक ने**

★ शुंग वंश के बाद भारत पर राज किया **–कण्व वंश ने**

★ पुष्यमित्र शुंग, खारवेल, गौतमीपुत्र शातकर्णी, वासुदेव एवं समुद्रगुप्त में वह शासक जो वर्ण व्यवस्था का रक्षक कहा जाता है **–गौतमीपुत्र शातकर्णी**

★ मौर्यों के बाद दक्षिण भारत में सबसे प्रभावशाली राज्य था **–सातवाहन**

★ सिमुक संस्थापक था **–सातवाहन वंश का**

★ गुप्त वंश, मौर्य वंश तथा कुषाण वंश में से वह वंश जिसके साम्राज्य की सीमाएं भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर तक फैली थी **–कुषाण वंश**

★ बाल विवाह की प्रथा आरंभ हुई **–कुषाणकाल में**

★ कला की गांधार शैली फली-फूली **–कुषाणों के समय**

★ अफगानिस्तान का बामियान प्रसिद्ध था- बुद्ध प्रतिमा के लिए जो कला शैली भारतीय और यूनानी (ग्रीक) आकृति का सम्मिश्रण है, उसे कहते हैं **–गांधार**

★ वह मूर्ति कला जिसमें सदैव हरित स्तरित चट्टान (शिस्ट) का प्रयोग माध्यम के रूप में होता था **–गांधार मूर्तिकला**

★ प्राचीन काल के भारत पर आक्रमणों के संबंध में सही कालानुक्रम है **–यूनानी-शक-कुषाण**

★ पहला ईरानी शासक जिसने भारत के कुछ भाग को अपने अधीन किया था **–डेरियस प्रथम**

★ चालुक्य, पल्लव, राष्ट्रकूट तथा सातवाहन राजवंशों में सबसे पुराना राजवंश था सातवाहन आंध्र सातवाहन राजाओं की सबसे लंबी सूची मिलती है **–मत्स्य पुराण में**

★ सातवाहनों की राजधानी अवस्थित थी **–अमरावती एवं प्रतिष्ठान में**

★ एका ब्राह्मण 'प्रयुक्त' हुआ है **–गौतमीपुत्र शातकर्णी के लिए**

★ राजा खारवेल का नाम जुड़ा है **–हाथीगुम्फा लेख के साथ**

★ अशोक, हर्ष पुलकेशिन द्वितीय एवं खारवेल में से वह, जो जैन धर्म का संरक्षक था **–खारवेल**

★ कलिंग नरेश खारवेल संबंधित थे **–चेदि वंश से**

★ दशरथ, बृहदथ, खारवेल तथा हविष्क राजाओं में से वह जिसका जैन धर्म के प्रति भारी झुकाव था **–खारवेल**

★ बाल विवाह की प्रथा आरम्भ हुई **–कुषाणकाल में**

★ अफगानिस्तान का बामियान प्रसिद्ध था **–बुद्ध प्रतिमा के लिए**

★ आन्ध्र सातवाहन राजाओं की सबसे लम्बी सूचि मिलती है **–मत्स्य पुराण में**

गुप्त काल

- इस वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल कहा जाता है।
- गुप्त शासक वैश्य थे (विष्णु उपासक)।
- ऐसा माना जाता है कि ये कुषाण शासकों के सामंत थे।
- इन्होंने बिहार के स्थान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अत: इन्हें वास्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने ''राजा-रानी'' प्रकार का सिक्का चलाया।
- महाधिराज का उपाधि धारण करने वाला चंद्रगुप्त–I था।
- इस समय शिक्षा का प्रमुख केन्द्र उज्जैन था।
- इसी वंश के समय महिला को समाज में स्थान देना शुरू कर दिया गया।
- इस वंश का दरबारी भाषा संस्कृत था।
- इसी वंश में बाल-विवाह की प्रथा प्रारंभ हुआ।
- प्रभावती गुप्त के पुना स्थित ताम्र पत्र अभिलेख में श्रीगुप्त का वर्णन मिलता है।
- पारा का आविष्कार भी इसी वंश के समय हुआ।
- इस वंश में गरूड़ मुद्राएँ सर्वाधिक लोकप्रिय थी।
- इस काल में गुजरात, बंगाल एवं तमिलनाडु वस्त्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था।
- इस वंश में सोने के मुद्रा को दीनार तथा चांदी के रुपए को रूपयक कहा जाता था।
- इसी काल में शतरंज का खेल प्रारंभ हुआ। जिसे चतुरंग कहा जाता था।
- हुणों का आक्रमण गुप्तवंश के शासक स्कंदगुप्त के समय हुआ था।
- सती प्रथा का वर्णन 510 ई. में एरण अभिलेख से मिलता है। उस समय शासक भानुगुप्त था।
- इस वंश में कुमारगुप्त अश्वमेघ यज्ञ किया था।
- गुप्त संवत् का प्रारंभ 319-20 ई. में चंद्रगुप्त–I ने चलाया था।

समुद्रगुप्त

- यह चंद्रगुप्त–I का पुत्र था।
- इसे प्राचीन भारतीय इतिहास के महानतम शासकों में गिना जाता है।
- यह कुमार देवी का पुत्र था। अत: यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- इसके बचपन का नाम कांच था।
- समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तारवादी थी। अत: यह अशोक के विपरीत था।
- इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के व राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे Tax (कर) वसूलता रहा।
- इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त की तुलना ''नेपोलियन'' से की है। इसलिए बी.ए. स्मिथ द्वारा समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा था। जो Early History of India में पुस्तक में लिखा हुआ है।
- पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा 3 समुद्र का पानी पीता था, अर्थात समस्त दक्षिण भारत समुद्रगुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- यह अश्वमेघ यज्ञ करवाया और अश्वमेघ कर्ता का उपाधि धारण किया।
- यह विक्रमांक का उपाधि धारण किया था और इसे कविराज भी कहा जाता था।
- इसके समय बौद्ध भिक्षु वसुबंधु को संरक्षण दिया गया था।
- इसको आर्यावर्त में दिग्विजय तथा दक्षिण भारत में धर्म विजय का कार्य किया।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा और अनुमति मांगी।
- समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दिया।
- समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी ''प्रयाग प्रशस्ती'' अभिलेख (इलाहाबाद) से मिलती है।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- प्रयाग स्तंभ लेख में जहांगीर शासक का वर्णन मिलता है।
- यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- समुद्रगुप्त ने कृष्णचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।
- इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक ''वेश-भूषा'' में दिखाया गया है।
- समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।
- समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- यह एक आयोग्य शासक था।
- इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच के खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक ''देवी चंद्रगुप्तम्'' में मिलती है।

चंद्रगुप्त-II

- इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- इसे शक विजेता भी कहा जाता था।
- इसे देवगुप्त के नाम से भी जाना जाता था।
- परम भागवत् का उपाधि इसी शासक द्वारा धारण किया गया था।
- विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- इसके समय व्याग्र शैली के सिक्के मिले है।
- इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें ''नवरत्न'' कहा जाता था।
- नवरत्न में सबसे प्रमुख कालीदास (संस्कृत लेखक), अमरदास (कवि), वराहमिहिर (खगोलविद्), धनवंतरि (आयुर्वेदाचार्य) दरबार में थे।
- चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- इसने अपनी यात्रा विवरण ''फो-क्यू-की'' है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- इसे महायान शाखा का 'OXFORD' कहा जाता है।
- विश्व का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षशिला' विश्वविद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- विश्व का पहला 'HOSTEL' सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय 'नालंदा विश्वविद्यालय' था।
- 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।
- स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुण्डों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- भानू गुप्त के 'एरण' अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- इस वंश के विनाश का कारण हुणों का आक्रमण था।
- हुण आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतो में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति थे।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- गुप्तकाल की भाषा संस्कृत थी।
- वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत भू-राजस्व था।
- यह 1/4 से लेकर 1/6 हो सकता था।
- भू-राजस्व को हख्य (नगद) या मेय (अनाज) के रूप में दिया जा सकता है।
- इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय की भी सर्वोच्च था।
- शासन की सबसे छोटे इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान (D.M.) के पद पर था।
- फाह्यान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छूआ-छूत) थी।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज्ञ कहा जाता था।
- इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। वे देवदासी भी हो सकती थी।
- इस समय बाल-विवाह, पदा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- इस समय वेश्यावृत्ति भी थी।
- वैश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- अजंता बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गई।
- गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व में सबसे ऊँची प्रतिमा बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आंतकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

सुदर्शन झील

क्र. सं.	राजा	कार्य	राज्यपाल
1.	चंद्रगुप्त मौर्य	निर्माण	पुष्यमित्र वैश्य
2.	अशोक	जीर्णोद्वार	तुसास्प
3.	रूद्रदामन	जीर्णोद्वार	सुविशाख
4.	स्कंदगुप्त	जीर्णोद्वार	पर्णदत्त

हुण

- हुण का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- तारामाण तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण आक्रमणकारी थे।
- मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- इसमें हुणों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग है।
- जब हूण भारत पर आक्रमण किया उस समय गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त था।
- यह एक बर्बर एवं खानाबदोश थे।
- यह मध्य एशिया का रहने वाला था।
- **हुण की दो शाखाएँ–** 1. पश्चिमी तथा 2. पूर्वी था।
- भारत पर जिस हुण ने आक्रमण ने किया वह पूर्वी शाखा था।
- चीनी साहित्य में हुण को हुंग-नू कहा जाता था।
- यह एक जाति समूह था जिसका कोई धर्म नहीं था।

पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश

- इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।
- इसकी प्रथम राजधानी थानेश्वर था।
- इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।
- प्रभाकर वर्धन की पत्नी का नाम यशोमति था।
- इन्होंने परम भट्टारक और महाराजाधिराज का उपाधि धारण किया था।
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली प्रभाकर वर्धन था।
- **प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं–**
  1. राजवर्धन, 2. हर्षवर्धन एवं 3. राजश्री
- राजश्री की विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ।
- मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- राजवर्धन ने देवगुप्त की हत्या कर दी।
- गौढ़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दिया। साथ ही इसने बौधी वृक्ष को भी कटवा दिया।
- वर्तमान बौद्धी वृक्ष छठी पीढ़ी की है।
- शशांक शैव धर्म का अनुयायी था।
- हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।
- **हर्षवर्धन के सामन 2 चुनौती थी–**
  1. राजश्री का पता लगाना एवं 2. साम्राज्य को संभालना।
- हर्षवधन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
- हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज को राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।
- **हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की–**
  1. नागानंद, 2. रत्नावली एवं 3. प्रियदर्शिका
- हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

- **इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की–**

  1. कादम्बरी एवं 2. हर्षचरित्र।
- हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता है।
- हषर्वर्धन को भारत का अंतिम हिंदु सम्राट माना जाता है।
- चीन राजा अपने राजदूत को हर्षवर्धन के दरबार में भेजा।
- इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।
- इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का केन्द्र था।
- इसके समय चीन का यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- 629 ई. में जब ह्वेनसांग आया था। नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- 'सी-यू-की' की रचना ह्वेनसांग द्वारा किया गया था।
- इसके नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (Student) तथा अध्यापन (Teacher) का कार्य किया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय के लिए 100 गांवों की आय हर्षवर्धन ने दान के रूप में दिया।
- ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- कुम्भ मेला का प्रारंभ हर्षवर्धन के द्वारा ही माना जाता है।
- हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु महायान शाखा से प्रभावित था।
- हर्षवर्धन के समय उत्तर भारत का सबसे महत्वपूर्ण शहर कन्नौज था।
- इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- इस 5वीं बौद्ध संगीति भी कहते हैं।
- हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी पुलकेशिन द्वितीय का कर्नाटक में स्थित 'एहोर' अभिलेख से मिलती है।
- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति आ गई।
- इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को ''युग-परिवर्तन'' का काल कहते हैं।
- हर्षवर्धन अंतिम बौद्ध राजा था जो संस्कृत का महान विद्वान था।
- हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज पर यशोवर्मन का शासन हुआ।